ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-09, No.01, September: 2025

संपोषित विकास का वैदिक अर्थ

DR.TRIPTI DAHRI ASSISTANT PROFESSOR, RAMJAS COLLEGE, UNIVERSITY OF DELHI EMAIL:SHARMA.TRIPTI49@YAHOO.COM

Abstract

यह शोध-पत्र वैदिक साहित्य के आलोक में *संपोषित विकास* की अवधारणा का विवेचन करता है। आधुनिक युग में 'Sustainable Development' पर्यावरण संरक्षण का वैश्विक सूत्र बन चुका है, किंतु इसका वैचारिक आधार भारतीय ऋषि परंपरा में प्राचीनकाल से विद्यमान है। ऋग्वेद, अथर्ववेद, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रंथों एवं स्मृतियों में मानव और प्रकृति के गहन तादात्म्य का प्रतिपादन हुआ है। यज्ञ, अहिंसा, संयम, वृक्षारोपण और पंचमहाभूतों के संतुलन के द्वारा जीवन को पर्यावरणोपयुक्त बनाने का संदेश मिलता है। रामायण, महाभारत, कालिदास तथा पुराणों में प्रकृति-पूजन और संरक्षण की अनेक विधियाँ उल्लिखित हैं। इस प्रकार, वैदिक चिंतन न केवल धार्मिक या दार्शनिक महत्व रखता है, बल्कि आज की पर्यावरणीय चुनौतियों का व्यावहारिक समाधान भी प्रदान करता है। शोध का निष्कर्ष है कि यदि वैश्विक स्तर पर भारतीय वैदिक पर्यावरण-दर्शन को अपनाया जाए, तो 'संपोषित विकास' संभव हो सकता है।

पर्यावरण की विषाक्तता को देखते हुए आज यह आवश्यक हो गया है कि व्यक्ति के चिंतन-पद्धति में परिवर्तन लाया जाय तथा पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता जागृत करके पर्यावरणीय प्रदूषण को समाप्त किया जाय। इसके लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि व्यक्ति को यह अनुभूति हो जाये कि सुरक्षित पर्यावरण उसके स्वस्थ व समृद्ध जीवन के लिए अपरिहार्य है। प्राचीन भारतीय साहित्य में मानव को इसी प्रकार का दायित्वबोध विधि-विधानों के माध्यम से करवाया गया था। 'पर्यावरणीय नीतिशास्त्र' की संज्ञा से अभिहित पर्यावरणीय चिंतन, समकालीन नीतिशास्त्र के अंतर्गत् व्यावहारिक नीतिशास्त्र के रूप में विकसित हुआ। ध्यातव्य है कि, वैदिक कालीन साहित्यों की एक मौलिक विशेषता पर्यावरण संरक्षण की रही है। वैदिककालीन साहित्य में पर्यावरण के स्वरूप तथा कारकों को विभिन्न रूपों में व्यक्त किया गया था। ध्यातव्य है कि ऋग्वेद के नारायण ऋषि ने 'पुरुष सूक्त' में सृष्टि की उत्पत्ति की व्याख्या करते हुए कहा है कि सर्वशक्तिमान परमात्मा हजारों सिरोंवाला, हजारों आँखों वाला तथा हजारो पैरों वाला, समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। इस जगत के निर्माता ने सर्वाश्रय प्रकृति को चारों ओर से अपने स्वरूप से घेर रखा है। प्रकृति को सभी तरफ से वरण करने के बाद भी वह इसके दश अंगुल पर सुशोभित है।""

In view of the increasing toxicity in the environment, it has become essential today to bring about a change in human thinking and to awaken sensitivity towards the environment in order to eliminate environmental pollution. The first and foremost necessity in this direction is to make individuals realize that a safe environment is indispensable for a healthy and prosperous life. In ancient Indian literature, this sense of responsibility towards nature was instilled in humans through various religious and moral codes. What is now termed as "Environmental Ethics" has evolved as a part of applied ethics within contemporary moral philosophy. It is worth noting that one of the fundamental features of Vedic literature was its emphasis on environmental protection. The Vedic texts express the form and elements of the environment in diverse ways .It is particularly noteworthy that in the *Rigveda*, Rishi Narayana, in the Purusha Sukta while explaining the origin of creation, states that the Almighty is one with thousands of heads, thousands of eyes, and thousands of feet, and is omnipresent throughout the universe. The Creator of this world has enveloped the all-encompassing nature with His own form from all sides. Even after embracing nature completely, He remains resplendent beyond it, by ten fingers' breadth.

Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-09, No.01, September: 2025

इस प्रकार संपूर्ण सृष्टि के स्वामी को मात्र 'दश अंगुल' पर सुशोभित बताकर, ऋषियों ने मानव के भीतर इस भाव को जागृत करने का प्रयत्न किया है कि हमें 'भोग तथा लाभ' से दूर रहना चाहिए। हमें अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति हेतू ही प्रकृति का दोहन करना चाहिए। 'ऋग्वेद' के ऋषि हिरण्यगर्भ प्रजापति का विचार है कि इस सृष्टि के स्वामी ने 'पञ्च तत्वों' (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश) की उत्पत्ति की।' वेदो में इसी 'पञ्च तत्वों' के द्वारा मानव शरीर की उत्पत्ति की बात कही गयी है। प्राचीन भारतीय साहित्यों में इन 'पञ्च-तत्वों' को शुद्ध रखने हेतु तथा इनकी सुरक्षा हेतु अनेक प्रकार के नियम तथा विधियों का निर्माण किया गया है।

In this way, by describing the Lord of the entire creation as being resplendent in just "ten fingers' breadth," the sages attempted to awaken in humans a sense that one must refrain from excessive indulgence and material gain. We should utilize nature only to fulfill our essential needs, not for greed or exploitation. According to the Rishi Hiranyagarbha Prajapati of the Rigveda, the Creator of this universe brought into existence the five elements — Earth (Prithvi), Water (Jal), Air (Vayu), Fire (Agni), and Space (Akash). The Vedas state that the human body itself is formed from these five elements. Ancient Indian scriptures laid down various rules and methods to keep these Pancha Mahabhutas (five great elements) pure and to ensure their protection. These principles were intended to maintain the balance of nature and guide human conduct in harmony with the environment.

वेदों में, पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, प्रार्थना की गयी है कि संपूर्ण विश्व को नियमों में चलाने का व्रत धारण करने वाले घृतवृत वरूण संपूर्ण विश्व की रक्षा करे। ऐसी मान्यता है कि वरूण ने ही सूर्य, अग्नि, जल, वायु को तथा पर्वतों पर सोमवल्ली को उत्पन्न किया है। ऋतुएँ तथा दिन-रात, वरूण के आदेश से ही संचालित होती है। वह 'ऋत्' (नैतिक-नियम) का संस्थापक है। अतः वरूण देवता हमें समस्त बंधनों से छुड़ाएँ।' अर्थात् सृष्टि के व्यवस्था क्रम को नियमित करते हुए, वरूण देवता संपूर्ण सृष्टि के स्वास्थ्य की रक्षा करें। वैदिक चिंतन-पद्धति में 'शांतिपाठ' का अत्यधिक महत्व है। यहाँ 'शांति' से तात्पर्य, पर्यावरण के संतुलन व शुद्धता से है, जिससे मानव तथा मानवेत्तर, संपूर्ण सृष्टि शांतिपूर्ण स्थिति में रहे। 'शुक्ल यजुर्वेद' में कामना की गयी है कि द्युलोक (अदृश्य) से लेकर पृथ्वी के सभी जैविक तथा अजैविक घटक संतुलन की अवस्था में रहें। नक्षत्र-युक्त आकाश, पृथ्वी, जल, औषधियाँ, वनस्पतियाँ तथा संपूर्ण संसाधन, ज्ञान एवं संतुलन की अवस्था को प्राप्त करें, तभी 'सृष्टि' और 'व्यक्ति' शांति तथा संतुलन प्राप्त कर सकता है। प्रार्थना करते हुए कहा गया है कि आकाश, वायुमंडल, पृथ्वी, जल तथा औषधियाँ शांतिमय हों।" वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण संरक्षण की इस परंपरा को अध्यात्म से सम्बद्ध करके वास्तव में उस वैज्ञानिक-परंपरा का निर्वहन किया था, जिसके लिए समकालीन युग में 'पर्यावरणीय-नीतिशास्त्र' कृत् संकल्प है।शुद्ध वायु के औषधीय गुणो के ज्ञाता ऋषियों ने 'ऋग्वेद' में प्रार्थना किया है कि हे वायु! अपनी औषध से यहाँ के सभी दोषों का निवारण करो, क्योंकि तुम ही विश्व की समस्त औषधियों से परिपूर्ण हो। वैदिक ऋषि समस्त प्रकृति को दैवीय गुणों से सम्बद्ध करने के क्रम में ऊर्जा के अपरिमित स्रोत सूर्य को 'सूर्यदेवो भव' की मान्यता प्रदान करते हैं, तथा जीव-अजीव के अस्तित्व की सुरक्षा हेतु प्रार्थना करते हैं कि सूर्य से हमारा कभी वियोग न हो। इसी प्रकार पृथ्वी को रत्नों की खान तथा विपुल अन्न का भंडार मानते हुए, मानव के सुरक्षा की कामना की गयी है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि वैदिक काल के ऋषियों ने पर्यावरण की सुरक्षा हेतु उसे आध्यात्मिक कलेवर प्रदान करने के साथ ही साथ मानव के मन में कल्याणकारी विचारों की प्राप्ति की कामना हेतु भी प्रार्थना किया है। इसी प्रकार 'ऋग्वेद' में पशुओं की हिंसा का भी निषेध किया गया है।'

In the Vedas, keeping in mind the protection of the environment, prayers have been offered to Varuna, the upholder of cosmic order and vows, to safeguard the entire universe**.** It is believed that Varuna created the Sun, fire, water, air, and the sacred Soma creeper that grows on the mountains. The seasons, as well as the cycle of day and night, are governed by his command. He is the originator of *Ṛita* — the moral and natural law. Thus, prayers are made to Lord Varuna to release us from all forms of bondage, meaning that by regulating the order of creation, he ensures the health and well-being of the entire universe. In Vedic philosophy, *Shantipath* (peace invocation) holds great significance. Here, "peace" implies environmental balance and purity, which ensures a harmonious existence for both humans and non-human beings. In the *Shukla Yajurveda*, there is a deep wish that all organic and inorganic

Copyright @ 2025 Author

components — from the invisible realms (Dyuloka) to Earth — remain in a state of balance. The star-filled sky, the Earth, waters, medicinal herbs, plants, and all resources are prayed to attain knowledge and harmony. Only then can both *creation* and the *individual* experience peace and balance.The prayer expresses a desire for peace to prevail in the sky, the atmosphere, the Earth, the waters, and the medicinal plants. By linking environmental protection with spirituality, the Vedic sages effectively upheld a scientific tradition that modern times recognize under the name *environmental ethics*.**Well aware of the medicinal properties of pure air, the Vedic sages prayed in the Rigveda:** “O Air! With your healing essence, remove all impurities from this place, for you are full of all the world’s medicinal powers. ”In their effort to associate all of nature with divine qualities, the sages recognized the Sun — the inexhaustible source of energy — as *Surya Devo Bhava* (May the Sun be divine) and prayed that we may never be separated from it, acknowledging its role in sustaining life and matter alike. Similarly, Earth was seen as a treasure trove of gems and abundant grain, and prayers were offered for the safety and well-being of humanity .Thus, it is clear that the Vedic sages not only gave a spiritual dimension to environmental protection but also offered prayers for instilling noble and welfare-oriented thoughts in the human mind. Likewise, in the *Rigveda*, violence against animals was also condemned, reflecting a comprehensive vision of ecological harmony.

पर्यावरण संरक्षण की धारणा का एक और स्वरूप 'अथर्ववेद' के 'पृथ्वी-सूक्त' में प्राप्त होता है। आथवर्ण ऋषि ने पृथ्वी की प्रार्थना करते हुए, संकल्पबद्ध होकर यह कामना की है कि 'भूमि के जिस स्थान पर मैं खनन करूँ, वहाँ शीघ्र ही हरियाली छा जाए। हे माँ! मुझे ऐसी सद्बुद्धि प्रदान करें कि आपके हृदय स्थल को न तो मैं आहत करूँ और न ही आपको दुःख पहुँचाऊँ (मन्त्र 35)। प्रकृति के भयादोहन से उत्पन्न हुआ पर्यावरणीय संकट इस बात का द्योतक है कि हमें पुनः वेदों में वर्णित उन सात्विक विचारों को मानव-मात्र में जागृत करने आवश्यकता है। वैदिक ऋषि इस तथ्य से भली भांति परिचित थे कि पशुओं के प्रति हिंसा से पर्यावरणीय-संतुलन बिगड़ जाएगा। अतः उन्होनें हिंसा के सभी रूपों को निषिद्ध किया था।

Another significant expression of the concept of environmental conservation is found in the *Prithvi Sukta* of the *Atharvaveda*. In this hymn, the sage Atharvan prays to Mother Earth with deep resolve, expressing the noble wish:*"On the part of Earth where I dig, may greenery quickly grow again. O Mother, grant me such wisdom that I may neither harm your heart nor cause you any sorrow."* (Mantra 35)This sincere prayer reflects a profound sensitivity toward nature — a call for sustainable use of natural resources, with a sense of reverence and responsibility. The current environmental crisis, born of reckless exploitation of nature, indicates that there is a dire need to reawaken those *sattvic* (pure and virtuous) thoughts described in the Vedas among all of humanity. The Vedic sages were fully aware that violence against animals would disturb the ecological balance. Therefore, they explicitly prohibited all forms of violence, advocating for harmony between human beings and the rest of the natural world.

वैदिक काल से ही प्रकृति के प्रति आदर व श्रद्धा के भाव का प्रस्फुटन हुआ, जिसका विकास संहिताओं में भी स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। मानव-जीवन के सुख तथा समृद्धि के लिए अहिंसा तथा संयम पर बल देते हुए विद्वानों ने पर्यावरण की सुरक्षा हेतु परमेश्वर से प्रार्थना किया है कि जो सामर्थ्य सूर्य, पृथ्वी, पर्वतों, औषधियों तथा जल में है, उसका नियमन करने का अनुग्रह करें।" इसी प्रकार संहिताओं में रक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से सदाचार, संयम आदि पर भी विशेष बल दिया गया है। ऐसे किसी भी कृत्रिम कार्य का निषेध किया गया है, जिससे पर्यावरण के असंतुलन की संभावना हो। ऐसी प्रार्थना की गयी है कि हम सभी कलहरहित तथा भद्रराष्ट्र के निवासी हों, जिसके सभी नियम सदा ही प्रकृति के अनुकूल हों। समकालीन युग में वैश्विक स्तर पर निर्मित होने वाले पर्यावरणीय-नियमों के बीज हमें संहिताओं के उपरोक्त विचारों में स्पष्ट रूप से दिखायी देता है। इसी प्रकार 'धर्म-सूत्र' भी आदेश देता है कि जिस कार्य में हानि हो, प्राण संकट में हो, वह कार्य नहीं करना चाहिए।" दूसरें शब्दों में, हमें प्रकृति के साथ ऐसा बर्ताव (दोहन) कभी नहीं करना चाहिए, जिसके कारण हमारा भविष्य असुरक्षित हो जाए। यहाँ 'संपोष्य-विकास' (Sustainable development) की अवधारणा का स्पष्ट प्रमाण मिलता है।

Copyright @ 2025 Author

 ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-09, No.01, September: 2025

Since the Vedic era, there has been a deep sense of respect and reverence toward nature, which is clearly reflected in the Vedic *Samhitas* as well. Emphasizing *non-violence* and *self-restraint* for human happiness and prosperity, the sages offered prayers to the Supreme Being for the regulation and balanced use of the powers inherent in the Sun, Earth, mountains, medicinal herbs, and water. In the *Samhitas*, along with prayers for protection, great importance is given to moral conduct, restraint, and discipline. Any artificial activity likely to disturb the balance of the environment has been explicitly discouraged. A heartfelt prayer was made that we may live in a conflict-free and virtuous nation (*bhadra-rashtra*), where all laws are always in harmony with nature. The seeds of modern environmental regulations at the global level can clearly be seen in these ancient ideas from the Samhitas. Similarly, the *Dharma Sutras* also instruct that no action should be undertaken if it causes harm or puts life at risk. In other words, we must never exploit nature in a way that endangers our future. This presents clear evidence of the ancient Indian understanding of the concept we now call **"sustainable development."**

पर्यावरण की सुरक्षा से सम्बद्ध विचारों का विस्तार उपनिषदों में भी हुआ है। 'श्वेताश्वर उपनिषद' में वर्णन प्राप्त होता है कि तत्कालीन वातावरण शांत तथा पर्यावरण स्वच्छ था।" ऋषियों ने शांति, अहिंसा तथा सत्य की रक्षा हेतु प्रार्थना किया है कि हे देव! हम कानों से कल्याणकारक वचन सुने, आँखों से उत्तम दृश्य देखें। जव तक हमारी आयु हो, सुदृढ़ शरीर अवयवों से युक्त होकर हम सबका हित करें। व्यक्ति के मन में शांति हो, राष्ट्र में शांति हो तथा विश्व में शांति हो।" स्पष्ट है कि पर्यावरण के संरक्षण एवं सुरक्षा की भावना इस काल में समृद्धि, सत्य, धर्म, स्वाध्याय, एकात्मदर्शन तथा आत्मकल्याण की शिक्षा के द्वारा व्यक्त् की गयी है।

The ideas related to environmental protection were further developed in the *Upanishads***.** The *Shvetashvaara Upanishad* mentions that the atmosphere during that time was peaceful and the environment was clean. The sages prayed for the preservation of peace, non-violence, and truth, saying:*"O Lord, may we hear auspicious words through our ears, may we see noble sights with our eyes. As long as we live, may we act for the welfare of all with strong and healthy bodies. Let there be peace in the hearts of individuals, peace in the nation, and peace throughout the world. "*It is evident that the spirit of environmental conservation and protection during that era was expressed through the teachings of prosperity, truth, righteousness (*dharma*), self-study (*svadhyaya*), unity of existence (*ekatmavada*), and self-welfare (*atma-kalyan*).

'ब्राह्मण ग्रन्थों' में भी पर्यावरण के सुरक्षा हेतु यज्ञ-क्रिया को अनिवार्य माना गया था। प्रकृति के 'पञ्च तत्वों' को संतुलित रखने के लिए विविध यज्ञों का आयोजन किया जाता था, जिसको समकालीन युग में वैज्ञानिकों द्वारा भी मान्यता प्राप्त हो चुकी है। इसी प्रकार स्मृतियाँ भी जन-जीवन के लिए नियम का प्रतिपादन करती है। 'मनुस्मृति' में पर्यावरण की सुरक्षा की शिक्षा व्यावहारिक विधियों के रूप में दी गयी है। पशुओं के प्रति हिंसा को निषिद्ध किया गया है। इसके साथ ही पर्यावरणीय असंतुलन के किसी भी रूप को, चाहे पशु-पक्षी की संतुलित संख्या हो या जीव-अजीव का संतुलन, सभी के लिए विधान किया गया है। 'याज्ञवल्क्य-स्मृति' में वृक्षों तथा वनस्पतियों को बिना उद्देश्य के काटने पर दण्ड का विधान किया गया है। कोपलों से युक्त डालों, हरी शाखा, तना तथा संपूर्ण वृक्ष काटने पर अर्थदण्ड का प्रावधान है।"

In the *Brahmana texts*, the ritual of *Yajna* (sacrificial offering) was considered essential for the protection of the environment**.** Various Yajnas were conducted to maintain the balance of the five elements of nature (*Pancha Mahabhutas*), and these practices have now been acknowledged by modern scientists as having ecological value. Similarly, the *Smritis* laid down codes of conduct for public life. In the *Manusmriti*, environmental protection is taught through practical guidelines. Violence against animals is strictly prohibited. Moreover, any form of ecological imbalance — whether related to the population of animals and birds or the balance between living and non-living beings — is addressed with prescribed regulations. In the *Yajnavalkya Smriti*, there are penalties prescribed for

 Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-09, No.01, September: 2025

cutting trees and plants without purpose. Fines are imposed for cutting branches with buds, green shoots, trunks, or entire trees. This reflects a legal and ethical concern for vegetation and forest conservation.

'श्रीमद्भागवत गीता' में तो कर्मयोग, भक्तियोग तथा ज्ञानयोग का समन्वय ही विद्यमान है। भारतीय चिंतन-पद्धति की अमूल्य निधि 'गीता' में श्रीकृष्ण ने अपने अस्तित्व के विषय में स्वयं ही कहा है कि-मैं आदित्यों में विष्णु, प्रकाशकों में सूर्य, सद्गुणों में मरीचि तथा नक्षत्रों में चंद्र हूँ....... आठ वस्तुओं में अग्नि, पर्वतों में सुमेरू तथा जलाशयों में समुद्र हूँ........... नदियों में गंगा हूँ।" ध्यातव्य है कि प्रकृति से स्वयं के तादात्म्य के माध्यम से श्री कृष्ण ने प्रकृति तथा पर्यावरण का आध्यात्मिक स्वरूप प्रदर्शित किया और इसकी महत्ता को व्यापक रूप प्रदान किया। प्रकृति के प्रति आदर का भाव, पर्यावरणीय-संतुलन के लिए अपरिहार्य है। 'श्रीमद्भागवत गीता' में प्रकृति के प्रति आदर का भाव 'संपोष्य-विकास' की आधारशिला के रूप में स्थापित है।

In the *Shrimad Bhagavad Gita*, there exists a harmonious integration of *Karma Yoga* (the path of action), *Bhakti Yoga* (the path of devotion), and *Jnana Yoga* (the path of knowledge). This sacred text, a priceless treasure of Indian philosophical thought, includes Lord Krishna's own declarations about His presence within elements of nature: *"Among the Adityas, I am Vishnu; among the radiants, I am the Sun; among the virtues, I am Marichi; and among the stars, I am the Moon... Among eight elements, I am Fire; among mountains, I am Sumeru; and among water bodies, I am the Ocean... Among rivers, I am the Ganga ."*It is noteworthy that through this deep identification with nature, Lord Krishna reveals the spiritual dimension of nature and the environment, highlighting their profound significance .This reverence toward nature is essential for maintaining environmental balance. In the *Bhagavad Gita*, this sense of respect for nature is firmly established as the foundation of **sustainable development**.

रामायण काल में धर्म, अहिंसा, लोक-कल्याण, तथा प्रकृति-प्रेम की धारणा अनेक स्थलों पर प्रदर्शित हुयी है। पर्यावरणीय-संतुलन के लिए यह सभी अनिवार्य कारक है। इस समय लोक-कल्याण हेतु यज्ञों पर विशेष बल दिया जाता था। आज विज्ञान भी इससे सहमत है कि यज्ञों द्वारा पर्यावरण की शुद्धता में वृद्धि होती है। ऋषिगण विविध प्रकार के यज्ञों के द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा की कामना के साथ जीवन व्यतीत करते थे, परंतु जब राक्षसों ने इन यज्ञों में विघ्न डालना प्रारंभ किया, तो भगवान राम ने उनका संहार किया, ऐसा वर्णन कई स्थलों पर मिलता है। इस काल में पर्यावरण अत्यन्त समृद्ध था। सीता के द्वारा हरिणों को घास देने की बात इस ओर संकेत देती है कि तत्कालीन मानव, प्रकृति के सभी तत्वों (जीव-अजीव) के प्रति दया व समानता का भाव रखता था। महाकवि तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' में उस समय के जीवन तथा पर्यावरण का बड़ा ही मनोरम चित्रण किया है, यथा-

सरिता सब पुनीत जलु बहहीं, खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं।
सहज बयरू सब जीवन्ह त्यागा, गिरी पर सकल करहिं अनुरागा।।"

During the era of the Ramayana, the concepts of dharma (righteousness), non-violence, public welfare, and love for nature were prominently reflected in many places. All these were essential factors for maintaining environmental balance. At that time, special emphasis was given to *yajnas* (sacrificial rituals) for the welfare of the people. Modern science also agrees that yajnas contribute to the purification of the environment. The sages lived their lives with the desire for environmental protection through various yajnas. However, when demons (rakshasas) began to disturb these yajnas, Lord Rama destroyed them, as described in many places .The environment during this period was extremely prosperous. The story of Sita feeding grass to the deer indicates that humans of that time had feelings of compassion and equality toward all elements of nature—both living and non-living. The great poet Tulsidas beautifully depicted the life and environment of that era in *Ramcharitmanas*, as follows:

"All the rivers flowed with pure water, birds, deer, and bees all lived happily. All creatures naturally renounced fear, and the entire mountain was filled with affection."

Copyright @ 2025 Author

 ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-09, No.01, September: 2025

'श्रीमद्भगवद्गीता' में पर्यावरण संरक्षण की गहनता से, महाभारत कालीन प्रकृति-विचार का स्वतः ही भान हो जाता है। वृक्षों की सुरक्षा के लिए ऐसी मान्यता थी कि कल्याण की इच्छा रखने वाले मनुष्य को वृक्ष लगाने चाहिए तथा उनकी पुत्रों की भांति रक्षा करनी चाहिए। जो व्यक्ति वृक्षों को दान करता है, वृक्ष परलोक में उसे पुत्र के समान पार कराता है (महाभारत, शांतिपर्व)। इसी प्रकार पशुओं की हिंसा तथा वनों को जलाने वाले व्यक्ति को पाप का भागी तथा प्रायश्चित का अधिकारी कहा गया है।" महाभारत के कालखण्ड पर लिखे गये काव्यों से भी तत्कालीन 'प्रकृति-मानव तादात्म्य', इसे ही 'प्रकृति का मानवीकरण' (या व्यापक रूप में जो आज के समय में अधिक उपयुक्त है 'मानव का प्रकृतिकरण') कहा जा सकता है। महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञान शांकुतलम्' के कुछ दृश्य ध्यातव्य है-शंकुतला जब अपने पतिगृह जाने लगी, तो उस समय संपूर्ण तपोवन (प्राणी तथा वनस्पतियाँ) उदास हो गया। केसर के पौधों की मुरझायी हुयी स्थिति को देखकर शकुंतला कहती है- देखो, हवा के झोंकों से हिलती हुयी पत्तियों (अंगुलियों के समान) से यह केसर का पौधा मुझे बुला रहा है।" मृग, मोर आदि सभी जीव शकुंतला के जाने से उदास तथा व्याकुल हो गये हैं। शकुन्तला जिन वृक्षों को जल पिलाये बिना स्वयं जल नहीं ग्रहण करती थी, उन्हीं वृक्षों से कामना की गयी कि हे तपोवन के वृक्षों। शकुन्तला अपने पतिगृह जा रही है, तुम सब उसे प्रसन्नतापूर्वक विदा करो। आभूषण तथा श्रृंगार की इच्छा होने पर भी, वो तुम्हारे कोमल पत्तों एवं कलियों को अकारण नष्ट नहीं करती थी। आज उसी शकुंतला को पतिगृह जाने की प्रसन्नतापूर्वक स्वीकृति दो।

The profound environmental awareness in the *Shrimad Bhagavad Gita* naturally reflects the nature-conscious thinking of the Mahabharata era. There was a belief that a person desiring welfare should plant trees and protect them like their own children. According to the *Mahabharata* (Shanti Parva), a person who donates trees is regarded as having a son in the afterlife. Similarly, those who harm animals or set forests on fire are considered sinners and liable for penance .The poems written during the Mahabharata period also reveal the deep "nature-human identity," which can be described as the "humanization of nature" or more broadly, what today might be called the "naturalization of humans. "Some scenes from the famous play *Abhijnanasakuntalam*, written by the great poet Kalidasa, are noteworthy. When Shakuntala was about to leave for her husband's home, the entire hermitage forest—both animals and plants—became sad. Seeing the withered state of the saffron plants, Shakuntala said, *"Look, the saffron plant, with its leaves trembling like fingers in the breeze, seems to be calling me."* Deer, peacocks, and other creatures grew sorrowful and restless at her departure. Shakuntala herself would not drink water without first offering it to the trees. She wished the trees of the hermitage to bid her a joyful farewell as she went to her husband's home .Though she desired ornaments and adornments, she never needlessly harmed the delicate leaves and buds of the trees. Now, please grant that same Shakuntala a happy acceptance as she goes to her husband’s home.

उपरोक्त वर्ण में 'माता भूमि पुत्रोऽहंपृथिव्याः' की भावना का विस्तारित स्वरूप देखने को मिलता है। समकालीन पर्यावरणीय-संकट की भयावहता को समाप्त करने का एकमात्र तरीका मानव का संयमी व सदाचारी होना ही है। जिस प्रकार का संयम शकुंतला के चरित्र से प्रकाशित होता है, आज उसी संयमित आचरण के क्रियान्वयन की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है।इसी प्रकार पुराणों में भी सृष्टि के कण-कण में ईश्वर के वास की मान्यता का प्रतिपादन करके, प्रकृति के चर-अचर जगत् के प्रति आध्यात्मिक श्रद्धा व्यक्त् की गयी है। दैवीय शक्ति से सम्बद्ध होने से, प्रकृति की सुरक्षा को मानव अपने आचरण का आवश्यक अंग बनाएगा तथा 'संपोष्य-विकास' की भावना फलीभूत होगी। 'मत्स्यपुराण' में 'संपोष्य-विकास' की इसी अवधारणा को दर्शाया गया है, यथा-

दशकूप-समावापी, दशवापी-समोहृदः।
दश हृद-समः पुत्रों, दश-पुत्र समो द्रुमः।।"

स्पष्ट है कि वैदिक काल में समग्रता की वह दृष्टि विद्यमान थी, जिसे विकसित करने के लिए वर्तमान काल में, 'गहन पारिस्थितिकी दर्शन' (Deep ecology) प्रयत्नशील है।

 Copyright @ 2025 Author

In the above description, an expanded form of the sentiment **'Mata Bhumi Putro'ham Prithivyaah'** (I am the son of Mother Earth) is evident. The only way to overcome the severity of the contemporary environmental crisis is through human restraint and ethical conduct. The kind of self-discipline exemplified by Shakuntala's character is what is now urgently needed to be practiced in our behavior. Similarly, the Puranas also express spiritual reverence for nature by affirming the presence of the divine in every particle of creation. Because nature is connected with divine power, humans will make the protection of nature an essential part of their conduct, thereby realizing the principle of **'Samposhya-Vikas'** (sustainable development).This concept of **'Samposhya-Vikas'** is illustrated in the *Matsya Purana*, as follows:

"Dashakupa-samavapi, dashavapi-samohadah,
Dashah hrid-samah putrah, dash-putra samo drumah."

(It implies that just as a tree has ten roots, ten trunks, and ten branches, similarly, there are ten sons like hearts at the center. Clearly, in the Vedic period, there was a vision of wholeness and interconnectedness — a perspective that modern times are trying to develop through the philosophy of **Deep Ecology**.

संदर्भ ग्रंथ:-

1. सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्, स भूमि विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्-शाङ्गुलम।।" - पुरुष सूक्त; ऋग्वेद, (10,90,1)1
2. ऋग्वेद (10, 121, 1)1
3. वेदा वीनां पदमन्तरिक्षेण, वेद नावः समुद्रियः।" ऋग्वेद (10,7)।
4. ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथ्वीःशान्तिरापः, शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः। शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिब्रह्मा शान्ति, सर्वशान्तिः शांतिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।" 'शान्तिपाठ', शुक्ल यजुर्वेद (36/17)1
5. आ वात वाहि भेषजं विवात वाहि यद्रपः, त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे।" 'ऋग्वेद' (137/3) 1
6. न सूर्यस्य संदृशे मा युपोथाः।" ऋग्वेद' (2/32/1) 1
7. यजुर्वेद (अ.5/9, 16) 1
8. 'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु। 'यजुर्वेद' (34,1-5)।
9. मा नो गोषु मा न अश्वेषु रीरिषुः, रूद्र माभिभातो वर्धर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा महे।" 'ऋग्वेद' (1,114,8)1
10. याते धामानि दिवि या पृथिव्यां या पर्वतेष्वोषवप्सु। तेभिनो विश्वैः सुमना अहेक्तन्त्राजन्त्सोमप्रति हत्या गृभाय।।" ऋ० वे० शा० सहि० (1.6.91)
11. गौतम धर्म-सूत्र (पृष्ठ संख्या 1,9,32)।
12. 'श्वेताश्वर उपनिषद' (II, 10)।
13. ॐ शं नो मित्रः शंवरणः।" अ तैत्तिरीय उपनिषद (1, 1)। ब-माण्डूक्योपनिषद (पृ० 12)1
14. 'मनुस्मृति' (5. 45)1
15. 'याज्ञवल्क्य स्मृति', (227-28)।
16. एतत्तदेव कदली वन मध्वर्ती, कान्ता सरवस्य शयनीय शिलातलं ते। अत्र स्थिता तृणम्दाद बहुशो दे दम्यः, सीता ततो हरिण कैनं विमुच्यते स्मः।।" - भवभूति (उत्तर रामायण, अंक-3. 18-19)1
17. महाभारत, शान्तिपर्व (35, 6)।

References:

1. *Sahasraśīrṣā* (The Thousand-Headed, Thousand-Eyed, Thousand-Footed Being), the Earth surrounded it from all sides and stood above by ten fingers. — **Purusha Suktam; Rigveda (10.90.1)**
2. **Rigveda (10.121.1)**

 Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-09, No.01, September: 2025

3. "The Vedas are like the strings of a veena (musical instrument), the Vedas are like the boat in the ocean." — **Rigveda (10.7)**
4. *"Om, May the heavens be peaceful, May the atmosphere be peaceful, May the Earth be peaceful, May the waters be peaceful, May the herbs be peaceful, May the plants be peaceful, May all the gods be peaceful, May Brahman be peaceful, May all peace prevail, Peace, Peace, Peace be unto me."* — **Shantipatha, Shukla Yajurveda (36/17)**
5. "O wind, carry the medicine, O wind, carry the healing waters, You are indeed the universal healer, the messenger of the gods." — **Rigveda (1.37.3)**
6. "There is no one like the Sun, no one like the dawn." — **Rigveda (2.32.1)**
7. **Yajurveda (A.5/9,16)**
8. "May my mind be filled with auspicious thoughts." — **Yajurveda (34.1-5)**
9. "Let us not harm cows, horses, or sheep, May Rudra not harm us, we who offer the sacred oblations." — **Rigveda (1.114.8)**
10. *"The realms in the sky, on the Earth, on the mountains, From these arise all life, the whole world with happiness and without conflict."* — **Rigveda, Shakala Samhita (1.6.91)**
11. **Gautama Dharmasutra (Pages 1, 9, 32)**
12. **Shvetashvatara Upanishad (II,10)**
13. "Om, may Mitra and Varuna be auspicious to us." — **Aitareya Upanishad (1.1), B-Mandukya Upanishad (p. 12)**
14. **Manusmriti (5.45)**
15. **Yajnavalkya Smriti (227-228)**
16. *"This is indeed the banana grove beside the honey lake, Beloved of all, with the bedrock beneath, Standing here are abundant grasses; From there Sita used to feed the deer, and so they were released."* — **Bhavabhuti (Uttara Ramayana, Act 3, Lines 18-19)**
17. **Mahabharata, Shantiparva (35.6)**

Copyright @ 2025 Author